राजनीति विज्ञान

बी.ए.1 ईयर के छात्रों के लिए

प्रथम प्रश्न पत्र : राजनीति विज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध

चरैवेति चरैवेति

महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

प्रस्तुतकर्ता -

डॉ. नरेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उधेशयों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देशय के लिए इसका उपयोग पूर्णत: प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करंगे और इसका व्यतिगत ज्ञान कि उन्नति के लिए ही प्रयोग करेंगे। इस ए-कंटेन्ट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

राजनीति विज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध

मनुष्य एक सामाजिक अथवा राजनीतिक प्राणी है। मनुष्य के जीवन में अनेक पहलू हो सकते हैं यथा - राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक। मनुष्य के जीवन के इन विविध पहलुओं का अध्ययन करने के लिए अनेक शास्त्र हैं जैसे- राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, इतिहास आदि। ये शास्त्र मनुष्य के जीवन के किसी न किसी पहलू से सम्बन्धित हैं। इसलिए ये सब सामाजिक शास्त्र हैं और परस्पर एक दूसरे से गहरा संबंध रखते हैं। मानव ज्ञान सामाजिक शास्त्रों तक ही सीमित नहीं है। उसमें प्राकृतिक विज्ञानों जैसे भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, भूगोल, वनस्पति विज्ञान और भूगर्भ शास्त्र इत्यादि का अध्ययन भी शामिल है। प्राकृतिक विज्ञानों और सामाजिक विज्ञानों का भी आपस में गहरा संबंध है। इस संबंध में डॉ. गार्नर ने कहा है, ''हम दूसरे सहायक विज्ञानों का यथावत ज्ञान प्राप्त किये बिना राजनीति विज्ञान एवं राज्य का पूर्ण ज्ञान ठीक उसी प्रकार प्राप्त नहीं कर सकते जिस प्रकार गणित के बिना यंत्र विज्ञान और रसायन शास्त्र के बिना जीव विज्ञान का यथावत् ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।''

राजनीति विज्ञान का सबसे बड़ा गुण सामाजिक विज्ञान की अन्य शाखाओं के निष्कर्षों को ग्रहण करने की तत्परता है। रोढ़ी के अनुसार, ''सम्भवतः राजनीति विज्ञान का सबसे बड़ा गुण उसकी विनम्रता है। अन्य विज्ञानों से शिक्षा लेने की तत्परता और अन्य सहयोगी विज्ञानों के सम्मुख अंतिम और निश्चयात्मक सिद्धान्त बनाने का दावा न करना उसके उन्नत विकास का प्रमाण है।'' राजनीति विज्ञान का सभी सामाजिक विज्ञानों से घनिष्ठ संबंध है। यहाँ कुछ प्रमुख विषयों के साथ उसके सम्बन्ध की चर्चा करेंगे।

1. राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र

राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र परस्पर घनिष्ठ रुप् से सम्बन्धित हैं और एक-दूसरे पर आश्रित हैं क्योंकि राज्य एक सामाजिक राजनीतिक संस्था है। इन दोनों शास्त्रों की घनिष्ठता को गार्नर ने इन शब्दों में व्यक्त किया है, ‘‘राजनीति सामाजिकता में सन्निविष्ट है और यदि राजनीति शास्त्र समाजशास्त्र से भिन्न है तो इसका कारण विषय के क्षेत्र की व्यापकता है न कि यह कारण कि उसे समाजशास्त्र से अलग करने के लिए किसी प्रकार की सीमायें है। प्रो. कैटलिन का भी यही कथन है कि ‘‘राजनीति शास्त्र और समाज शास्त्र अभिन्न हैं और वास्तव में ये एक वस्तु के दो पहलू हैं।’’ किन्तु कुछ अन्य विद्वान इन दोनों में पर्याप्त अन्तर को भी स्वीकार करते हैं।

<u>राजनीति विज्ञान तथा समाजशास्त्र में अन्तर-</u>

यद्यपि राजनीति विज्ञान तथा समाजशास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध है फिर भी गहराई से देखने पर दोनों में अन्तर दिखाई पड़ता है। दोनों शास्त्रों के मध्य भेद को निम्न प्रकार समझा जा सकता है-

(1) क्षेत्र की दृष्टि से अन्तर -

समाजशास्त्र का क्षेत्र व्यापक है। समाजशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत समस्त सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति और उनका स्वरूप आ जाता है। राजनीति शास्त्र के अध्ययन का प्रमुख विषय राज्य भी उनमें से एक है जबकि राजनीति विज्ञान केवल राज्य के संगठन और उसकी सत्ता से संबधित मतों का ही अध्ययन करता है।

(2) प्राचीनता में अन्तर-

समाजशास्त्र राजनीति विज्ञान की अपेक्षा अधिक प्राचीन है। समाजशास्त्र संगठित और असंगठित समुदायों का अध्ययन करता है। यह सर्वविदित है कि संगठन से पूर्व

असंगठित समाज की स्थिति रही होगी। इस प्रकार निश्चय ही राजनीतिशास्त्र का जन्म समाजशास्त्र के पश्चात हुआ होगा।

(3) दृष्टिकोण में अन्तर-

समाजशास्त्र में वैधानिक सम्बंधों के साथ-साथ प्रथाओं, शिष्टाचार तथा नैतिकता आदि के दृष्टिकोण से भी विचार किया जाता है जबकि राजनीति विज्ञान में केवल मनुष्यों के वैधानिक सम्बन्धों का ही अध्ययन किया जाता है।

(4) विषय वस्तु में अन्तर -

समाजशास्त्र में मनुष्य तथा सामाजिक संस्थाओं के विकास तथा उत्पत्ति के कारणों की खोज की जाती है। इस प्रकार समाजशास्त्र के अध्ययन का विषय व्यक्ति तथा समाज है। राजनीति विज्ञान समाजशास्त्र की भाँति सामाजिक तŸवों की खोज नहीं करता है वह तो प्रारम्भ से ही यह मानकर चलता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। साथ ही राजनीति विज्ञान का अध्ययन विषय राज्य है।

(5) यथार्थ और आदर्श का अन्तर-

समाजशास्त्र में हम तथ्यों का अध्ययन करते हैं और उसमें हम देखते हैं कि क्या हो चुका है और क्या होने जा रहा है जबकि राजनीति विज्ञान में हम अध्ययन करते हैं कि क्या होना चाहिए। इस प्रकार समाजशास्त्र वर्णनात्मक विषय है जबकि राजनीति विज्ञान आदर्शात्मक विषय है।

<u>राजनीति विज्ञान और सामाजशास्त्र की पारस्परिकता-</u>

(1) समाजशास्त्र की राजनीति शास्त्र को देन-

समाजशास्त्र का अध्ययन बहुत विस्तृत है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के समस्त सामाजिक संबंधों पर विचार किया जाता है चाहे वे राजनैतिक हों, आर्थिक या नैतिक। इस अर्थ में समाजशास्त्र को अन्य सामाजिक शास्त्रों के समान ही राजनीतिशास्त्र

का भी आधार कहा जा सकता है। समाजशास्त्र ने राजनीतिशास्त्र के अध्ययन में अत्यधिक सहायता की है। राज्य की उत्पत्ति, विकास एवं संगठन को समझने में राजनीतिशास्त्र को समाजशास्त्र से अत्यधिक मदद मिली है। वर्तमान काल में राजनीति शास्त्र में राजनीतिक व्यवहार को बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है। जिसके अध्ययन में समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धतियाँ अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई हैं।

(2) राजनीति शास्त्र की समाजशास्त्र को देन-

राजनीतिशास्त्र भी समाजशास्त्र के अध्ययन में सहयोग करता है। राजनीति शास्त्र समाजशास्त्र को वे तथ्य प्रदान करता है जिनकी सहायता से समाजशास्त्र समाज के राजनीतिक जीवन का कुशलतापूर्वक अध्ययन करता है। समाजशास्त्र राज्य की उत्पत्ति, संगठन व कार्य आदि का ज्ञान राजनीतिशास्त्र से ही प्राप्त करता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र व राजनीति शास्त्र में जहाँ घनिष्ठ संबंध है वहाँ अन्तर भी है। उनकी पारस्परिक घनिष्ठता के संबंध में एच.गिडिंग्स का यह कथन है, ''समाजशास्त्र के प्राथमिक सिद्धान्तों से अनजान व्यक्ति को राजनीतिशास्त्र पढ़ाना वैसा ही है जैसा कि न्यूटन के गति संबंधी नियमों से अनजान व्यक्ति को अंतरिक्ष शास्त्र या ऊष्मा गति को पढ़ाना।'' गिलक्राइस्ट का कथन है, ''राजनीति विज्ञान विशिष्ट शास्त्र है, जबकि समाजशास्त्र एक विस्तृत शास्त्र है।'' बार्कर ने दोनों शास्त्रों के बीच अन्तर को इस प्रकार प्रकट किया है, ''राजनीतिशास्त्र सिर्फ राजनीति के समुदायों का अध्ययन करता है जो एक संविधान द्वारा संयुक्त किये गये हैं और एक ही सरकार के अन्तर्गत हैं। समाजशास्त्र सभी समुदायों का अध्ययन करता है। राजनीतिशास्त्र एक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार कर लेता है कि मनुष्य एक सामाजिक राजनीतिक प्राणी है। वह समाजशास्त्र की भाँति यह बताने का प्रयास नहीं करता कि वह ऐसा प्राणी क्यों है ?'' अन्त में यह कहा जा सकता है कि इन दोनों शास्त्रों का पारस्परिक सहयोग ज्ञान के विकास के लिए आवश्यक है।

इन दोनों शास्त्रों का सहयोग ज्ञान की एक नई शाखा के रूप में विकसित हो रहा है जिसे "राजनीतिक समाजशास्त्र" का नाम दिया जाता है।

2. राजनीति विज्ञान और इतिहास

राजनीति विज्ञान तथा इतिहास में गहरा संबंध है। राजनीति विज्ञान के पिता (विषय) के रूप में इतिहास को जाना जाता है।राजनीति शास्त्र राज्य के अतीत, वर्तमान व भविष्य का अध्ययन करता है। इतिहास समस्त मानव सभ्यता के अतीत का अध्ययन करता है और इस संबंध में राज्य के अतीत का भी अध्ययन करता है। इन दोनो शास्त्रों की घनिष्ठता को सीले ने इन शब्दों से व्यक्त किया है, "राजनीतिशास्त्र के अभाव में इतिहास फलहीन होता है और इतिहास के अभाव में राजनीति विज्ञान आधारहीन होता है।" बर्गेस का कहना है, "यदि इन दोनों शास्त्रों को एक दूसरे से अलग कर दिया जाये तो उनमें से एक मृत नहीं तो अपंग तो जरूर हो जायेगा और शेष दूसरा भी मृग मरीचिका बन जायेगा।"

कुछ विद्वान राजनीति शास्त्र व इतिहास में अन्तर को भी स्वीकारते हैं। अर्नेस्ट बार्कर के अनुसार, "यद्यपि इतिहास व राजनीति शास्त्र की सीमाएँ आरम्भ से अन्त तक परस्पर संबंधित हैं, किन्तु वे वास्तव में भिन्न व स्वतंत्र शास्त्र हैं।"

इन दोनों शास्त्रों के बीच संबंधों को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।

<u>राजनीति विज्ञान तथा इतिहास की पारस्परिकता-</u>

राजनीति विज्ञान तथा इतिहास विभिन्न रुपों में एक दूसरे पर आश्रित हैं।

(1) इतिहास की राजनीति शास्त्र को देन-

इतिहास अतीत की राजनीतिक घटनाओं व तथ्यों का ऐसा संग्रह है जिससे राजनीति शास्त्र में अपने सिद्धान्तों के निर्धारण में सहायता मिलती है। गेटेल के अनुसार "राजनीतिक संस्थाओं को उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में ही समझा जा सकता है।"

एक विशेष अर्थ में इतिहास राजनीति शास्त्र की प्रयोग शाला के रुप् में भी सहायक होता है। अतीत में राजनीतिक क्षेत्र में किये गये कार्यों के परिणाम एवं प्रभाव का विवरण इतिहास में मिलता है। राजनीतिक क्षेत्र की इन घटनाओं को प्रयोग कहा जाता है और इतिहास को प्रयोगशाला कहा जाता है। अतीत में किये गये प्रयोग वर्तमान की समस्याओं को सुलझाने में और भविष्य को सुन्दर बनाने में सहायक होते हैं। लिप्सन का कथन है, ''अपने काल क्रमानुसार अध्ययन से इतिहास राजनीति के विद्यार्थी को एक परिपक्वता और विकास की भावना देता है। इसलिए सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के लिए अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।''

(2) राजनीति शास्त्र की इतिहास को देन-

हालांकि इतिहास सम्पूर्ण मानव सभ्यता के अतीत का अध्ययन करता है किन्तु इस अतीत में राजनीतिक घटनायें ही प्रमुख होती हैं। यदि इतिहास के क्षेत्र में से राजनीतिक घटनाओं का विवरण निकाल दिया जाये तो वह न केवल नीरस हो जायेगा, बल्कि महत्वहीन भी हो जायेगा। राजनीतिशास्त्र की यह देन इतिहास के प्रत्येक काल में देखी जा सकती है।

<u>राजनीति शास्त्र और इतिहास में भेद</u>-

यद्यपि राजनीति विज्ञान और इतिहास परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं, फिर भी दोनों में कुछ मौलिक अन्तर भी हैं जो निम्नानुसार हैं:-

(1) अध्ययन की पद्धति में अन्तर -

दोनों शास्त्रों की अध्ययन पद्धति में अन्तर है। इतिहास मात्र वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग करता है अर्थात् अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध और तटस्थ अध्ययन करता है। किन्तु राजनीति शास्त्र पर्यवेक्षणात्मक व दार्शनिक पद्धतियों का भी प्रयोग करता है।

(2) क्षेत्र का अन्तर -

राजनीतिशस्त्र और इतिहास के अध्ययन क्षेत्र में पर्याप्त अन्तर है। राजनीतिशास्त्र मनुष्य के राजनीतिक जीवन तथा राजनीतिक संस्थाओं का ही अध्ययन करता है। किन्तु इतिहास मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन का व समस्त संस्थाओं के अतीत का अध्ययन करता है। इसके अतिरिक्त इतिहास केवल अतीत का ही अध्ययन करता है जबकि राजनीति विज्ञान अतीत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन करता है।

(3) उद्देश्य में अन्तर -

इतिहास का उद्देश्य है मात्र अतीत की तटस्थ जानकारी प्राप्त करना जबकि राजनीतिशास्त्र का उद्देश्य है अतीत के अनुभवों से लाभ उठाकर वर्तमान व भविष्य को अधिक सुखद व लाभदायक बनाना। इसके अतिरिक्त इतिहासअतीत की वास्तविक घटनाओं का अध्ययन करता है। अतः उसकी प्रकृति तथ्यात्मक है। किन्तु राजनीतिशास्त्र की प्रकृति आदर्शात्मक है। यह अतीत की राजनीतिक घटनाओं का ही अध्ययन नहीं करता बल्कि वर्तमान की समस्याओं पर भी विचार करता है और भविष्य को उज्ज्वल बनाने की आकांक्षा रखता है।

3. राजनीति शास्त्र व अर्थशास्त्र

राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। इन दोनों के घनिष्ठ संबंध को गेटेल ने इस प्रकार व्यक्त किया है, ‘‘आर्थिक परिस्थितियाँ राज्य के संगठन, विकास तथा क्रिया कलापों पर प्रभाव डालती हैं और प्रत्युत्तर में राज्य अपने कानूनों द्वारा आर्थिक परिस्थितियों को बदलता है।’’ इस संबंध में गार्नर का यह कथन है ’’बहुत सी आर्थिक समस्याओं का समाधान राजनीतिक संस्थाओं द्वारा किया जाना आवश्यक है, जबकि दूसरी ओर राज्य से सम्बन्धित बहुत सी समस्याओं की उत्पत्ति का कारण आर्थिक होता है।’’ गुरुमुख निहालसिंह के अनुसार, ’’प्रारम्भिक दिनों में अर्थशास्त्र को राजनीति विज्ञान की एक शाखा माना जाता था तथा उसके अध्ययन का विषय राज्य के लिए राजस्व

प्राप्त करना था। इसी प्रकार इसे 'घरेलू अर्थशास्त्र' की अपेक्षा 'राजनीतिक अर्थशास्त्र' कहा जाता था। राजनीतिक अर्थशास्त्र यह प्रकट करता था कि अर्थशास्त्र राजनीति विज्ञान के अधीन है।''

<u>राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र की पारस्परिकता -</u>

राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र की पारस्परिकताओं को निम्नानुसार समझा जा सकता है -

(1) अर्थशास्त्र की राजनीतिशास्त्र को देन-

अर्थशास्त्र ने राजनीतिशास्त्र को विभिन्न रुपों में प्रभावित किया है। राज्य की उत्पत्ति व उसके विकास में आर्थिक क्रियाएँ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और आज भी आर्थिक क्रियाऐं राजनीतिक संस्थाओं के विकास में सहायक बन रही हैं। माक्र्स के अनुसार, ''आदिम समाज में जब निजी सम्पत्ति की संस्था उत्पन्न हुई तो राज्य का जन्म हुआ और जब भी समाज के आर्थिक ढांचे में परिवर्तन हुआ तो राज्य के संगठन पर भी उसका प्रभाव पड़ा।''

राज्य के क्रियाकलापों व उसकी नीतियों के पीछे आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव होता है। लास्की के अनुसार, ''किसी भी राज्य में कानूनों की प्रकृति का संबंध उन प्रभावपूर्ण माँगों से होता है जिनका उन्हें सामना करना होता है और यह माँगें साधारण रूप से उस ढंग पर आधारित होती हैं जिससे उन पर शासन मंे आर्थिक शक्ति का वितरण किया जाता है।

राजनीतिक इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि राजनीतिक क्रान्तियों व युद्धों का प्रमुख कारण भी आर्थिक असंतोष होता है। उदाहरण के लिए 1789 की फ्रांस की क्रान्ति तथा सन् 1917 की सोवियत संघ की साम्यवादी क्रान्ति का मूल कारण तत्कालीन आर्थिक दुरावस्था ही थी। इटली में फासिस्ट तानाशाही, जर्मनी में नाजी तानाशाही तथा स्पेन में गृहयुद्ध आदि का प्रमुख कारण आर्थिक असंतोष को बताया

जा सकता है। प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध का मूल कारण पूंजीवादी व्यवस्था में निहित है। इसी प्रकार पश्चिमी पाकिस्तान के आर्थिक शोषण ने पूर्वी पाकिस्तान में विद्रोह को जन्म दिया और वह बांग्लादेश के रुप में स्वतंत्र राज्य बन गया।

(2) राजनीतिशास्त्र की अर्थशास्त्र को देन-

राजनीति शास्त्र भी अपने ढंग से अर्थशास्त्र को प्रभावित करता है। राज्य की नीतियाँ समाज के आर्थिक ढांचे व व्यवस्थित रुप् को निर्धारित करती हैं। राज्य की नीति के अनुसार ही वस्तुओं के उत्पादन व वितरण की प्रणाली निश्चित की जाती है। समाज के आर्थिक विकास पर प्रशासन के स्तर का भी स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। यदि प्रशासनिक ढ़ाचा उच्च स्तर का है और अपने दायित्वों को कुशलतापूर्वक निभाने में समर्थ है तो आर्थिक विकास शीघ्र होगा और यदि प्रशासनिक ढांचा भ्रष्ट है तो आर्थिक विकास शीघ्र नहीं होगा। हालांकि युद्ध एक सैनिक व राजनैतिक गतिविधि है किन्तु इसका भी प्रभाव समाज के आर्थिक ढांचों पर पड़ता है। युद्ध के कारण संबंधित राज्यों का सैनिक व्यय बढ़ जाता है और आर्थिक प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(3) विषय वस्तु की समानता-

इन दोनों शास्त्रों के बीच घनिष्ठता का एक अन्य आधार दोनों की विषय वस्तु की साम्यता है। जैसे- साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद तथा सार्वजनिक वित्त आदि अर्थशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान दोनों के ही अध्ययन की विषय वस्तु हैं।

<u>राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र में भेद-</u>

राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र के मध्य भेद को निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता हैः-

(1) अध्ययन विषय में अन्तर-

अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मनुष्य के आर्थिक जीवन से है जबकि राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध मनुष्य के राजनीतिक जीवन से है। आइवर ब्राउन का कथन है, ‘‘अर्थशास्त्र

का संबंध मुख्यतः वस्तुओं से होता है और राजनीति शास्त्र का व्यक्तियों से'' इसके अतिरिक्त राजनीति शास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में वे सब विषय आते हैं जो मानव कल्याण के लिए आवश्यक हैं और इस दृष्टि से स्वयं अर्थशास्त्र भी उसके क्षेत्र में आता है किन्तु अर्थशास्त्र का क्षेत्र इतना व्यापक नहीं है।

(2) प्रकृति में अन्तर-

दोनों शास्त्रों की प्रकृति में भी पर्याप्त अन्तर है। राजनीति विज्ञान आदर्शात्मक विज्ञान है किन्तु अर्थशास्त्र मात्र वर्णनात्मक विज्ञान है। राजनीति शास्त्र सामाजिक व नैतिक मूल्यों की दृष्टि से विचार करता है जबकि अर्थशास्त्र मात्र भौतिक दृष्टि से विचार करता है।

(3) उद्देश्य में अन्तर-

अर्थशास्त्र व्यक्ति का अध्ययन धन के संदर्भ में करता है जबकि राजनीति विज्ञान व्यक्ति का व्यक्ति के रुप में ही अध्ययन करता है।

(4) क्षेत्र की दृष्टि में अन्तर-

राजनीति विज्ञान का क्षेत्र अर्थशास्त्र की अपेक्षा व्यापक है क्यांेकि वह सामाजिक जीवन के आर्थिक पहलू के साथ-साथ अन्य पहलुओं जैसे-सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा नैतिक आदि से भी संबंध रखता है। जबकि अर्थशास्त्र में प्रमुख रूप से आर्थिक समस्याओं का ही अध्ययन किया जाता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि जहाँ राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र में घनिष्ठता है वहीं उनमें आधारभूत अन्तर भी हैं। इन दोनों के भेद को गिलक्राइस्ट ने इन शब्दों में व्यक्त किया है, ''राजनीति शास्त्र राज्य का विज्ञान है, अर्थशास्त्र सम्पत्ति का विज्ञान है।'' इनकी घनिष्ठता के संबंध में चार्ल्स बियर्ड ने कहा है, ''अर्थशास्त्र के बिना राजनीति शास्त्र अवास्तविक व महत्त्वहीन रचना मात्र है।''

4. राजनीति विज्ञान और मनोविज्ञान

मनोविज्ञान व्यक्ति के मन की क्रियाओं तथा उसके बाह्य व्यवहार का अध्ययन है। यह विज्ञान विभिन्न मानसिक अवस्थाओं में मनुष्य के आचरण पर प्रभाव डालता है। बुडवर्थ के अनुसार, ''मनोविज्ञान व्यक्ति से संबंधित क्रियाओं का पारस्परिक विज्ञान है।'' स्काउट के अनुसार, ''मनोविज्ञान व्यक्ति की उन आन्तरिक शक्तियों का अध्ययन करता है, जो मनुष्य को अपने जीवन में अनुभव करने, विचार करने तथा इच्छा करने की योग्यता प्रदान करती हैं।'' राजनीति विज्ञान का मनोविज्ञान के साथ सम्बन्ध दिन प्रतिदिन घनिष्ठ होता जा रहा है। मनोविज्ञान विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन है और मानवीय व्यवहार और प्रकृति को समझे बिना राजनीति विज्ञान का अध्ययन ठीक प्रकार से नहीं किया जा सकता। गार्नर के अनुसार, ''सरकार को स्थिर और लोकप्रिय होने के लिए अपने अधीन व्यक्तियों के मानसिक विचारों को अभिव्यक्त करना चाहिए।''

इन दोनों शास्त्रों की घनिष्ठता को सर्वप्रथम बैजहॉट ने 1873 में प्रकाशित अपनी पुस्तक, ''फिजिक्स एण्ड पॉलिटिक्स'' में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था। इसके बाद यह विचार निरन्तर लोकप्रिय होता गया और वर्तमान समय में इस दृष्टि से ली बोन, ग्राहम वालेस, टार्डे, दुर्खीम आदि नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जो इन दोनों शास्त्रों की घनिष्ठता को स्वीकार करते हैं। किन्तु कुछ विद्वान इन दोनों शास्त्रों के बीच पर्याप्त अन्तर को भी स्वीकार करते हैं। इन दोनों शास्त्रों के मध्य संबंध को निम्नानुसार समझा जा सकता है -

<u>राजनीति विज्ञान और मनोविज्ञान की पारस्परिकता -</u>

राजनीति विज्ञान और मनोविज्ञान परस्पर अनुपूरक व सहयोगी हैं। इन दोनों की पारस्परिकता को निम्नानुसार समझा जा सकता है -

(1) मनोविज्ञान की राजनीतिशास्त्र को देन-

वर्तमान राजनीतिशास्त्री यह मानते हैं कि मनोविज्ञान वास्तविक अर्थों में राजनीति शास्त्र को आधार प्रदान करता है। ब्राइस का कथन है, ''राजनीति शास्त्र की जड़ें मनोविज्ञाान में निहित हैं।'' इसका अर्थ है कि राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

राजनीति में मनोवैज्ञानिक तथ्यों की उपयोगिता को स्वीकारते हुए वर्तमान राजनीति शास्त्री मनोवैज्ञानिक अध्ययन पद्धति के प्रयोग पर जोर देने लगे हैं। यह पद्धति किसी राष्ट्र की जनता के राजनीतिक व्यवहार का विश्लेषण करती है और इससे उपलब्ध मनोवैज्ञानिक तथ्यों का राजनीतिशास्त्र में उपयोग किया जाता है। मनोवैज्ञानिक पद्धति बताती है कि मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार के पीछे बुद्धि, तर्क व विवेक के स्थान पर अबुद्धिवादी भावनाओं, आदतों, प्रवृत्तियों तथा अनुकरणों के संकेत आदि तत्वों का विशेष महत्व होता है।

यह विश्वास किया जाता है कि जब शासन की नीतियाँ जनता के मनोविज्ञान के अनुसार निर्धारित की जाती हैं तो जन असंतोष जन्म नहीं लेता और क्रान्ति की सम्भावना भी सीमित हो जाती है। किन्तु जब शासन जनता के मनोविज्ञान की उपेक्षा करता है तो क्रान्ति और जन आन्दोलन जन्म लेते हैं। फ्रांस की 1789 की क्रान्ति के मूल में शासकों द्वारा जनता के मनोविज्ञान की उपेक्षा निहित थी।

(2) राजनीति शास्त्र की मनोविज्ञान को देन-

राजनीति शास्त्र भी मनोविज्ञान को प्रभावित करता है। राजनीति शास्त्र मनोविज्ञान को राजनीतिक क्रियाकलापों से संबंधित अध्ययन सामग्री प्रदान करता है। जिससे मनोविज्ञान और भी अधिक समृद्ध हो जाता है। प्रत्येक देश की शासन व्यवस्था का वहाँ की जनता के विचारों व आचरण पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व नाजी, जर्मनी, फासिस्ट इटली तथा जापान की अधिनायकवादी व्यवस्थाओं ने इन देशों की जनता को साम्राज्यवादी व युद्धप्रिय बनाया था। किन्तु आज इन देशों में लोकतंत्र है और इनकी जनता शांतिप्रिय और मानवतावादी है।

राजनीति विज्ञान और मनोविज्ञान में अन्तर-

दोनों शास्त्रों के बीच उपरोक्त घनिष्ठ संबंध होने के बावजूद निम्नलिखित अन्तर भी हैं -

(1) अध्ययन क्षेत्र की दृष्टि से-

मनोविज्ञान व्यक्ति की समस्त मानसिक क्रियाओं का अध्ययन आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से कर सकता है। किन्तु राजनीतिशास्त्र मात्र बाह्य राजनीतिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

(2) प्रकृति की दृष्टि से-

मनोविज्ञान एक यथार्थवादी विज्ञान है जबकि राजनीति विज्ञान यथार्थवादी होने के साथ ही आदर्शवादी भी है। मनोविज्ञान, मनुष्य की मनोवृत्ति 'क्या थी' और 'क्या है' का अध्ययन करता है। किन्तु यह विचार नहीं करता है कि उसे 'क्या होना चाहिये।' किन्तु राजनीतिशास्त्र राजनीतिक जीवन के संदर्भ में 'क्या था', 'क्या है', तथा 'क्या होना चाहिए' का भी अध्ययन करता है।

(3) आधारभूत धारणा की दृष्टि से-

मनोविज्ञान मनुष्य को मूल रुप् में एक ऐसा मानव मानता है जो बुद्धि के स्थान पर भावनाओं के आवेग व संवेग से संचालित होता है। इसके विपरीत राजनीति शास्त्र मनुष्य को मूलतः बुद्धि सम्पन्न विवेकशील एवं सभ्य प्राणी मानकर चलता है।

(4) विकास की दृष्टि से-

विद्वानों का विचार है कि राजनीतिशास्त्र एक अतिप्राचीन शास्त्र है और उसका पर्याप्त विकास भी हो चुका है। किन्तु मनोविज्ञान एक नवीन शास्त्र है और मोरिस लिन्सबर्ग के अनुसार तो यह अपने विकास की अवस्थाओं में ही है। इसका विकास वैयक्तिक अनुभवों के आधार पर सामान्यीकरण तक ही हुआ है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि राजनीतिशास्त्र और मनोविज्ञान में जहाँ अत्यधिक घनिष्ठ संबंध है वहीं इनमें आधारभूत अंतर भी है। वस्तुतः राजनीति विज्ञान में मनोविज्ञान की पद्धति के प्रयोग की एक सीमा है।

6. राजनीति विज्ञान और दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र जीवन और जगत की प्रकृति और उसके मूल संबंधी मानव की खोज से संबंधित शास्त्र है। ये उन सिद्धान्तों का अध्ययन करता है जिनका प्रतिपादन सृष्टि, जीवन और जगत के संबंध में किया गया है।

राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन किये जाने वाले 'राजनीतिक जीवन' और 'राजनीतिक विश्व' उस विश्व का ही भाग है, जिसकी प्रकृति और जिसके मूल की खोज दर्शनशास्त्र के अध्ययन का विषय है। इस दृष्टि से इन दोनों विषयों का परस्पर संबंध होना स्वाभाविक है। इन दोनों के पारस्परिक संबंधों को निम्नानुसार समझा जा सकता है।

<u>राजनीति विज्ञान और दर्शन शास्त्र की पारस्परिकता-</u>

राजनीति विज्ञान और दर्शनशास्त्र में अनेक समानतायें हैं जिन्हें निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता है -

(1) उद्देश्यों की समानता-

दर्शन शास्त्र का उद्देश्य इस बात की खोज करना है कि सृष्टि क्या है, विश्व क्या है और इन सबके मूल में क्या है। राजनीति विज्ञान का उद्देश्य भी राज्य और राजनीतिक जीवन के स्वरूप तथा उसके मूल की खोज करना है। ये दोनों ही विषय अपने अध्ययन के विषय के मूल और उसकी प्रकृति का अध्ययन करने के लिए प्रयत्नशील है। इस प्रकार दोनों विषयों का उद्देश्य समान है।

(2) अध्ययन के स्वरूप की समानता-

दर्शन शास्त्र सैद्धान्तिक और वैचारिक अध्ययन का विषय है। जीवन की प्रकृति और उसका मूल तÿव चेतन, अचेतन, द्वैतवाद आदि उसके अध्ययन विषय के प्रमुख तत्व हैं। यद्यपि राजनीति विज्ञान का समस्त अध्ययन विषय मात्र सैद्धान्तिक और वैचारिक नहीं है और आज राजनीति विज्ञान में व्यावहारिक राजनीति के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाता है, लेकिन आज भी सैद्धान्तिक अध्ययन इस विषय के सम्पूर्ण अध्ययन का एक प्रमुख भाग बना हुआ है। राज्य की उत्पत्ति, राज्य का उद्देश्य, स्वतंत्रता, समानता, विधि सम्प्रभुता और ऐसी अनेक राजनीतिक धारणाओं और राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन इस विषय में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

(3) अध्ययन पद्धति की समानता-

दर्शन शास्त्र की अध्ययन पद्धति दार्शनिक पद्धति है। राजनीति विज्ञान की प्रमुख रूप से दो अध्ययन पद्धतियाँ हैं। पहली आनुभविक वैज्ञानिक पद्धति, जिसके अन्तर्गत तुलनात्मक, पर्यवेक्षणात्मक और वैज्ञानिक आदि विभिन्न पद्धतियों को अपनाया जाता है। दूसरी, दार्शनिक पद्धति, प्लेटो, थॉमस मूर, रूसो, हीगल, ग्रीन तथा बोसांके आदि ने प्रमुख रूप से दार्शनिक पद्धति का प्रयोग किया है। आनुभविक वैज्ञानिक पद्धति को अपनाने वाले विचारक भी किसी न किसी रूप में तर्क और कल्पना का सहारा लेते हैं।

<u>राजनीति विज्ञान और दर्शन शास्त्र में अन्तर-</u>

दोनों विषयों में घनिष्ठ संबंध होते हुए भी कुछ अन्तर हैं जो कि निम्नानुसार हैं -

(1) दर्शन शास्त्र सम्पूर्ण जीव जगत और सृष्टि के नियामक तत्व का अध्ययन करता है लेकिन राजनीति विज्ञान के अध्ययन का क्षेत्र मुख्य रूप से मनुष्य का राजनीतिक जीवन और राजनीतिक विश्व है।

(2) दर्शनशास्त्र की मूल प्रकृति सैद्धान्तिक और वैचारिक है। किन्तु राजनीति विज्ञान की प्रकृति सैद्धान्तिक और वैचारिक ही नहीं है, बल्कि व्यावहारिक अध्ययन और तथ्यात्मक विश्लेषण भी उसकी प्रकृति का एक प्रमुख अंग हैं।

(3) राजनीति विज्ञान का संबंध मुख्यतया साकार, मूर्त और प्रत्यक्ष से है जबकि दर्शनशास्त्र का संबंध मुख्यतया निराकार अमूर्त व अप्रत्यक्ष से है।

7. राजनीति विज्ञान और भूगोल

भूगोल का संबंध भूमि, वायु, वर्षा, खनिज पदार्थ, कृषि, समुद्र, नदी तथा पहाड़ इत्यादि से होता है। भूगोल उन प्राकृतिक दशााओं का वर्णन करता है जिनका मनुष्य के जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। राज्य के निर्माणकारी तत्त्वों में भूखण्ड एक महत्वपूर्ण तत्व है और भूगोल के अध्ययन के विषय भी भूखण्ड अर्थात् पृथ्वी, जल तथा वायु होते हैं। अतः भूगोल और राजनीति विज्ञान परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंद्ध होते हैं। इन दोनों के संबंधों को निम्नानुसार समझा जा सकता है।

<u>राजनीति विज्ञान और भूगोल की पारस्परिकता-</u>

अरस्तू, ने सबसे पहले इस बात का प्रतिपादन किया था कि जलवायु, भूमि, समुद्र तट, पहाड़ और नदियाँ तथा खाड़ियाँ आदि, राजनीतिक इतिहास तथा किसी देश की सभ्यता और संकृति पर अमिट छाप छोड़ देती हैं। बोदां ने राजनीति विज्ञान तथा भूमि के संबंध की घनिष्ठता पर बल दिया है। मान्टेस्क्यू का कथन था ‘‘ठण्डे देशों के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता तथा गर्म देशों के लिए दासता स्वाभाविक है।’’ रूसो ने अठारहवीं शताब्दी में जलवायु तथा सरकार के स्वरूप में संबंध स्थापित करते हुए कहा है कि ‘‘गर्म जलवायु निराँकुश शासन के लिए, ठण्डी जलवायु बर्बरता के लिए और सम जलवायु अच्छे जनतंत्रीय शासन के लिए उपयुक्त होती है। ’’थॉमस बक्ल‘‘ के अनुसार, ‘‘किसी देश के लोगों के चरित्र और उनकी राजनीतिक संस्थाओं को निर्धारित करने वाला सबसे प्रमुख तत्व, उसकी भौगोलिक एवं भौतिक परिस्थिति है।’’

ब्लंटशली, रायटर और मेकाईवर आदि आधुनिक विद्वानों ने भी राजनीतिक जीवन पर भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव के महत्व को स्वीकार किया है।

किसी भी देश के समाज की राजनीतिक समस्याओं तथा जीवन को समझने के लिए वहाँ के भूगोल का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। भूगोल न केवल राष्ट्र की गृहनीति को प्रभावित करता है बल्कि उसकी विदेश नीति को भी प्रभावित करता है। अमेरिका और रूस की राष्ट्रीय शक्ति में वृद्धि का कारण उनकी प्राकृतिक सम्पदा और विभिन्न पदार्थों की बहुतायत रहा है।

अपनी भौगोलिक स्थिति खनिज पदार्थों की बहुतायत एवं पेट्रोल के विशाल भण्डार के कारण आज पश्चिमी एशिया के देश अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र बन गये हैं। स्विट्जरलैण्ड में प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सफलता का कारण वहाँ की भौगोलिक स्थिति है। भूटान और नेपाल जैसे देशों का राजनीतिक दृष्टि से पिछड़ा होना प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से उनके असम्पन्न होने के कारण है। भूगोल के बढ़ते महत्व के कारण ‘भू-राजनीति’ नाम से एक नये विषय का निर्माण हुआ है जो भौगोलिकता के राजनीतिक प्रभावों का उल्लेख करता है।

<u>राजनीति विज्ञान तथा भूगोल में अन्तर-</u>

भूगोल तथा राजनीति विज्ञान में पारस्परिकता होते हुए भी दोनों में निम्नानुसार अन्तर है -

(1) विषय वस्तु में अन्तर -

भूगोल के अन्तर्गत विभिन्न देशों की प्राकृतिक दशा, जलवायु तथा वनस्पति आदि का अध्ययन किया जाता है जबकि राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत राज्य, सरकार तथा विधि का अध्ययन किया जाता है।

(2) प्रकृति में अन्तर -

भूगोल ठोस तथ्यों से सम्बन्धित विज्ञान है जबकि राजनीतिशास्त्र तथ्यों के साथ-साथ आदर्श का चित्रण भी करता है।

(3) निश्चितता में अन्तर-

भूगोल एक निश्चित विज्ञान है तथा उसके नियमों में निश्चितता रहती है। जबकि राजनीति विज्ञान अनिश्चित विज्ञान की श्रेणी में आता है।

संदर्भ/ग्रंथ

राजनीतिक विज्ञान, कक्षा 11, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान